[illegible] वर्ष — 4 अंक — [illegible] ISSN : 2582-1679

भाषा सहोदरी

भाषा सहोदरी हिंदी

मुगानर सर

भाषा सहोदरी

आठवाँ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी अधिवेशन

(गोवा)

गुख्य संयोजक एवं प्रबन्ध संपादक

जय कान्त मिश्रा

प्रधान संपादक

डॉ० शालिनी शुक्ला

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

उप संपादक

डॉ० सुनील बापू बनसोडे

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जयसिंहपुर कॉलेज, जयसिंहपुर,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

सह संपादक

अमित कुमार गुप्ता

हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

भाषा सहोदरी-हिंदी®

(पंजीकृत न्यास)

कार्यालय : सी–36 बी, अप्पर ग्राउण्ड, जनता गार्डन
(नजदीक–दिल्ली पुलिस सोसायटी) मयूर विहार–1, नई दिल्ली–110091

सम्पर्क सूत्र : +91-9811972311, 9599303676, 8851552593

Email : sahodaribhasha@gmail.com, Web.: www.bhashasahodarihindi.org

Scanned with OKEN Scanner

80.	भारतीय धर्म, दर्शन और साहित्य	डॉ० वंदना तिवारी	90
81.	असम के राभा संस्कृति की विशेषताएँ	एमी मेहजाफी हुसैन	91
82.	चन्द्रकान्ता कृत 'अपने अपने कोणार्क' उपन्यास में निहित स्त्री अस्मिता के प्रश्न	गुरु प्यारी यादव	92
83.	साहित्य और सामाजिक चेतना	हसमुख एम० राठोड	93
84.	छोटे बच्चों में कैसे करें हिन्दी का विकास	हिना एस० राठोड	94
85.	समाज एक पहचान अलग : किन्नर विमर्श	हितेश कुमार मिश्र	95
86.	महादेवी वर्मा : स्त्री–मुक्ति का स्वर	जागृति	96
87.	"प्रतिज्ञा" और "त्यागपत्र" में नारी की सामाजिक स्थिति	जयन्ती कुमारी	97
88.	श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य साहित्य में शिक्षा–व्यवस्था पर व्यंग्य	कमलेश बी० पटेल	98
89.	तुलसी काव्य की भाषा एवं अभिव्यक्त सामाजिक चिंतन	कौशल कुमार पटेल	99
90.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य का समाजिक प्रभाव	कुणाल गोस्वामी	100
91.	लोक साहित्य में भारतीय पृष्ठभूमि	खराड़ी विक्रमभाई हमीरजी	101
92.	कर्नाटक राज्य : भाषा, शिक्षा और साहित्य	खेमकिरण सैनी	102
93.	छोटे बच्चों मे कैसे करे हिंदी का विकास	माधुरी पौराणिक	103
94.	साहित्य की विश्वसनीय विधा : संस्मरण	मानसी नाईक	104
95.	यशपाल के उपन्यासों में स्त्रीवादी चिंतन	श्रीमती अर्चना सिंह (प्राध्यापिका)	105
96.	हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता संघर्ष	श्रीमती गीता वी० निक्कम	106
97.	दलित विमर्श	नीरज गुरुदास गांवकार	107
98.	गिरीजा भारती कृत "अस्तित्व" उपवास में किन्नर विमर्श	निराली मणिक कालगापूरे	108
99.	"भारतीय राजनीति में वाद विवाद में भाषा के गिरते स्तर का युवाओं पर कितना असर"	निर्मला एस० राठोड	109
100.	प्रेमचन्द की कहानियों में स्त्री विमर्श	निशा सिंह पटेल	110
101.	दलित एवं जनजाति विमर्श : दलित स्त्रियों की समस्या	पल्लवी मिश्रा	111
102.	हिंदुस्तान में हिंदी का स्थान	पंकज	112
103.	सिनेमा और साहित्य का पारस्परिक संबंध	पटेल सत्यमकुमार गोविंदभाई	113
104.	विश्व में बढता हुआ हिंदी का प्रभाव	पटेल सुनिलकुमार अजितभाई	114
105.	कृषक : एक त्रासदीपूर्ण जीवन	पूनम सिंह	115
106.	21वीं सदी के हिंदी साहित्य में निबंध का स्थान	प्रतिभा एस० बिलगी	116
107.	आदिवासी समाज के विस्थापन का स्वरूप : जंगल जहाँ शुरू होता है	प्रेम शंकर सिंह	117
108.	हिंदी गज़लों में सामाजिक बोध	प्रा० एस०आर० दलवी	118
109.	हिंदी अध्यापन में नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का महत्व	प्रा० डॉ० गजानन चव्हाण	119
110.	मराठी दलित साहित्य एवं दलित आन्दोलन	प्रा० डॉ० कल्याण जी०एस०	120
111.	समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श	प्रा० डॉ० एम०ए० येल्लूरे	121
112.	तीसरी ताली उपन्यास में किन्नर समाज की व्यथा	प्रो० डॉ० मुनेश्वर एस०एल०	122
113.	इक्कीसवीं शती के हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श	प्रा० डॉ० रामचंद्र मारूती लोंढे	123
114.	मीडिया में हिंदी अध्यापन की भूमिका	प्रा० डॉ० सरिता मंजू सिंधी	124
115.	साहित्य एवं सिनेमा में सामंजस्य	प्रा० डॉ० शैलजा जायसवाल	125
116.	हिंदी मानक भाषा का स्वरूप	प्रा० डॉ० सुरेखा प्रेमचंद मंत्री	126
117.	हिंदी–मराठी दलित आत्मकथाओं में सामाजिक चेतना	प्रा० डॉ० वी०पी० चव्हाण	127
118.	छोटे बच्चों में कैसे करें हिंदी का विकास	प्रा० मालती बंसराज यादव	128
119.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श	प्रा० सौ० मानसी संभाजी शिरगांवकर	129
120.	आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में नारी–विमर्श	प्रा० मारूफ मुजावर	130
121.	रचना और रचनाकार की प्रतिबद्धता	प्रा० आर०पी० भोसले	131

Scanned with OKEN Scanner

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में नारी–विमर्श

नारी विमर्श वर्तमान युग का सर्वाधिक चर्चित विषय रहा है। समय के साथ बदलती नारी की स्थिति एवं रूपों को साहित्य में अभिव्यक्त किया जा रहा है। नारी को जननी माता के रूप में पूजनीय माना गया है। फिर भी नारी को असंख्य अभावों का मुकाबला निरंतर करना पडता है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, वैज्ञानिक, कला, क्रीडा आदि अनेक क्षेत्रों में उन्होंने सफलता से जुडे कार्य संपन्न किए हैं। वस्तुतः देखा जाय तो मानव जाति की विकास का मूल स्रोत नारी है। वह मानव के सामाजिक जीवन की रीढ है। फिर भी उसका सामाजिक स्थान पर आज भी अनेक प्रश्नचिह्न खडे हैं।

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का प्रारंभ कथा–साहित्य से होता है। हिंदी के वर्तमान आधुनिक कथा–साहित्य में नारी समाज की त्रासदी और विडंबना, उसकी शोषित स्थिति, उसकी आर्थिक, सामाजिक, पराधीनता, सदियों से चले आ रहे स्त्री–संबंधों, सामंतीय मूल्यों, रूढिग्रस्त मान्यताओं और धारणाओं से जुडे प्रश्नों को खुले, तीखे एवं साहसपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जा रहा है। पुरुष प्रधान समाज में नारी की नियति को दर्शाने के प्रयास कथा लेखक और लेखिकाओं ने बराबर किए हैं। लेकिन यह माना गया है कि शोक्त होने के कारण एक नारी अपने वर्ग की समस्याओं पर अधिक प्रामाणिक ढंग से लिख सकती है। आज नारीवादी भूमिका को लेकर लिखे गए साहित्य में नारी लेखिकाओं के साथ–साथ पुरुष लेखकों ने भी अहम् भूमिका निभाई है। जिनमें प्रेमचंद, यशपाल, निराला, रामदरश मिश्र, सुरेंद्र वर्मा, भीष्म साहनी, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, राजेंद्र यादव, सुधीश पचौरी, अरुणसिंह, सुधा अरोडा, नासिरा शर्मा, शशीप्रभा गुप्ता, क्षमा शर्मा, राजी सेठ, चित्रा मुद्गल, अर्चना वर्मा, निरूपमा सेवती, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, कात्यायनी, मेहरून्नीसा परवेज, मालती जोशी, मृदुला गर्ग आदि ने नारी लेखन को दिन–ब–दिन समृद्ध किया है।

आधुनिक हिंदी नारीवादी साहित्य का बुनियादी दायित्व नारी को खुद की अस्मिता की पहचान कराना है। उसे सीमित दायरे से बाहर निकालकर स्वाभिमानी एवं स्वतंत्र जीवन प्रदान करता है। जैसे प्रभा खेतान की 'आओ पेपे घर चले' की नायिका परंपरागत बंधनों को त्यागकर अस्तित्व को बनाए रखने में संघर्ष करती है। इसी प्रकार क्षमा शर्मा की 'रास्ता छोडो डार्लिंग' कहानी नारी अस्मिता की परिचायक है। साथ ही नारी–विमर्श नारी को अपनी अस्मिता के साथ–साथ सामाजिक और राजनीतिक प्रतिष्ठा दिलाने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें राजी सेठ की 'गलत होता पंचतंत्र' में नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा को उभारा गया है।

प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' और 'पिली आंधी' उपन्यास में पुरुषों की रुग्ण मानसिकता के खिलाफ आवाज उठाकर आर्थिक स्वतंत्रता को नारी मुक्ति का सशक्त आधार बनाया। चित्रा मुद्गल ने 'आवां' उपन्यास में मजदूर की बेटी नमिता पांडे के संकल्पों, संघर्षों, मोहभंग, पलायन और वापसी को समय और समाज के संदर्भों में परिक्षित किया है। संभवतः हिंदी नारीवादी कथाकारों ने पारिवारिक पातिव्रत्य धर्म का विरोध अपने कथा–साहित्य में किया है, जिसमें निर्मल वर्मा की 'लवर्स' कहानी का नायक नायिका से शादी करना चाहता है, लेकिन नायिका शादी के बंधन में बँधकर गुलाम नहीं बनना चाहती अपितु वह जिंदगी भर मित्र के समान रहना चाहती है।

अर्चनासिंह की 'मुझे जीना आता है' कहानी नारी की आर्थिक निर्भरता की मॉग करती है। जब नायिका को नौकरी का नियुक्ति पत्र मिलता है तो घरवालों के विरोध के बावजूद भी वह नौकरी करती है। साथ ही नारी–विमर्श नारी–नर की समानता पर बल देता है, जिसमें कृष्णा सोबती, रामदरश मिश्र आदि की रचनाएँ इसका प्रमाण खडा करती हैं। नारी–विमर्श की अभिव्यक्ति का मूल स्वर नारियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं नारी–पुरुष की समानता के इर्द–गिर्द घूमता रहा है।

प्रचलित सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह करना नारीवादी साहित्य की विशेषता रही है। ऐसी व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाने वाली कथाकारों में मंजुल भगत, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, तस्लीमा नसरीन, सुधा अरोडा आदि प्रमुख हैं। तसलीमा नसरीन के 'लज्जा' और 'तीसरी गुठ्ठी' उपन्यास में नारी का क्रूर सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह दिखाई देता है। क्षमा शर्मा की 'परछाई अन्नपूर्णा' कामकाजी महिलाओं के संकट, संघर्ष और सामाजिक स्थितियों के संदर्भ हैं। इस नारी के एक ऑख में ऑसू हैं तो दूसरी ऑख में दुनिया बदलने का मजबूत इरादा। मृणाल पांडे के 'परिधि पर स्त्री' में शोषित ग्रामीण, शहरी कामकाजी महिलाओं के दुःख–दर्द को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित किया है। सुधा अरोडा की 'अन्नपूर्णा मंडल की आखरी चिट्ठी' में ससुराल में प्रताडित नारी की व्यथा को बखूबी अभिव्यक्ति मिली है। नारीवादी साहित्य नारी की ऐसी कल्पना करता है कि वह स्वयं को और समाज को भी बदले। कुल मिलाकर हिंदी का आधुनिक कथा–साहित्य नारी की बदलती मानसिकता को अंकित करता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नारीवादी साहित्य शोषणरहित मानवतावादी व्यवस्था की स्थापना कर स्त्री को मानवीय अधिकार दिलाना चाहता है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अधिकार के लिए नारीवाद लडता है। अतः नारी को मानवोचित अधिकार दिलाना नारीवादी साहित्य का अंतिम ध्येय रहा है। जो बात नारी स्वयं नहीं कह सकती, वह बातें वह साहित्य के समाज तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त कर रही है। इक्कीसवीं शती ने संगणक, इंटरनेट और साइबर की सौगात देकर नारी की सोच को बदला है। नारी लेखन ने इस परिवर्तन को खुले दिमाग से स्वीकारा है, परंतु नारी की आत्मप्रतिष्ठा, आत्मसम्मान जब तक समाज स्वीकार नहीं करता, तब हमारे समाज में नारी–विमर्श का चिंतन होता रहेगा।

प्रा० मारूफ मुजावर
सातारा, महाराष्ट्र

Scanned with OKEN Scanner